अरविन्द कुमार त्रिपाठी द्वारा पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन





लोक नाट्य
Folk Theatre

Puratan BANDA, Bundelkhand ka Sankshipt Varnan

Arvind Kumar Tripathi

ISBN : 978-93-5906-820-6

लोक नाट्य Folk Theatre

अध्याय शीर्षक	लोक नाट्य
सर्वाधिकार	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
आइ एस बी एन/ **ISBN**	**978-93-5906-820-6**
प्रकाशक	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक ग्राम – अछरौन्ड, बान्दा – 210 001 उत्तर प्रदेश
मूल्य	निःशुल्क, पुस्तक मित्र को देना
सन्स्करण	प्रथम, 01 अप्रैल 2020
आवरण/मुखपृष्ठ	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
शब्द – संयोजन	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
मुद्रक	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
सन्दर्भ/साभार/सौजन्य	अध्याय **Reference** देखे

Chapter Heading	**Folk Theatre**
Copyright @	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
ISBN	**978-93-5906-820-6**
Publisher	**Arvind Kumar Tripathi** **Village - Achharaund** **Banda - 210 001** **Uttar Pradesh**
Price	**Free, Circulate to Friends**
Edition	**First, 01 April 2020**
Cover Main	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Word Compositor	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Printer	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Reference/ Gratitude/ courtesy	**Peruse Chapter - REFERENCE**

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

लोक नाट्य Folk Theatre

पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड – लोक नाट्य रूपों का संक्षिप्त वर्णन

लोक नाट्य Folk Theatre

लोक नाट्य

वैदिक काल से ही लोकनाट्य की परम्परा देखने को मिल जाती है। यज्ञों के बीच प्रहसनों का होना इस बात का सन्केत है कि उस समय नाट्य रुपों का आरंभ हो चुका था। अकुत्रियज्ञ आदि के अवसरों पर प्रहसन के माध्यम से मनोरंजन के अवसर जुटाए जाते थे। प्रबुद्ध दर्शक वर्ग को यज्ञ के कर्मकाण्डों के बीच लघुनाटकीय दृश्य बताकर उन्हें कार्यक्रम में बान्धे रखना संचालक का विशेष गुण माना जाता था। वैदिक संवादों में यम यमी, उर्वशी पुरुरवा, इन्द्र वामदेव आदि के प्रसंगों को नाटकीय संवाद शैली में प्रस्तुत किया जाता था। ये लाके नाट्य के प्रारंभिक लक्षण माने जा सकते हैं। संस्कृतकाल में पतंजलि ने पात्रों की वेषभूषा का विशेष रुप से उल्लेख किया है। काले और लाल रंगो से कंस और कृष्ण के कपड़ों को भिन्नता देना नाट्य योजना का ही अंग था।

लोक–नाट्य के कितने ही रूप हमें मिलते है। जैसे

अकुत्रि	रास/रासलीला
	नौटकी
	स्वान्ग
	भँडैती या नकल
	भाण्ड
	भगत या नौटंकी
	संगीत स्वांग
	खोइया
	शारीरिक या कायिक
	रामलीला
	कीर्तनिया
अकुत्रि	यक्षगान
	भवाई
	बिदेसिया
	माच
	तमाषा
	जात्रा
	कथकली
	आदि

लोक –नाट्य में नाट्य अथवा अभिनय, नृत्य, संगीत तथा संभाषण या संलाप या कथोपकथन तथा तत्व सभी बाते किसी न किसी रूप या परिणाम में होती हैं। स्वांग, भड़ेती और खांइया में संगीत और नृत्य का कभी–कभी अत्यन्ताभाव हो सकता है। स्वांग और खांइया निजी मनोरंजन और नृत्य आवश्यकता के अनुसार अव्यावसायिक भाव से होते हैं। अन्य लोक –नाट्य में वाणी विषयक आधार के लिये पहले कृति प्रस्तुत की जाती है। उसी के आधार पर उन्हें खेला जाता है। ये कृतियाँ ं तो लोक–साहित्य के अंतर्गत रखी जायेगी। लोक–नाट्य के अंतर्गत अन्य बातों पर ध्यान दिया जाता है, यद्यपि कृति का आधार निरन्तर रखा जाता है।

रामलीला–

वैष्णवी आभा से दीप्त बुन्देलखण्ड में रामचरित्र पर आधारित रामलीला के मंचन की पंरपरा गोस्वामी तुलसीदास के चित्रकूट–काल से ही लोकव्याप्त है। अकुत्रि रामचरित मानस तथा राधेश्याम रामायन के काव्यांशों के साथ गद्य–पद्य के मिश्रित संवाद और बीच–बीच में नृत्य भी रहते हैं। कथानक को आगे बढाने में समाजी की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। धनुषयज्ञ जिसे स्थानीय भाषा में परशुरामी भी कहते हैं, प्रमुख ग्राम्यांचलों में होती रहती है। अनेक स्थानों पर दस या पंद्रह दिवसीय लीलायें भी होती हैं। वाद्यों में हरमोनियम, ढोल, मंजीरा, कांसा, झींका आदि का प्रयोग होता है।

नौटंकी–

यह ड्रामा का ही आधुनिक रूप है। इसको संगीत भी कहते है। बाद में इसका नौटंकी नाम अधिक प्रचलित हो गया। नौटंकी के दो प्रचलित स्वरूपों हाथरसी शैली तथा कानपुर शैली में से इस क्षेत्र की नौंटकी पर कानपुरी शैली एवं पारसी नाट्य शैली का प्रभाव मिलता है। इसमें गद्यात्मक संवादों के साथ, साधारण गायन तथा प्रभावी अभिनय होता है। महिलाओं की भूमिकायें पहले पुरूष ही करते थे, अब महिलायें भी करने लगी हैं। कथानक प्रायः सामाजिक, ऐतिहासिक एवं धार्मिक किन्तु श्रृंगार–प्रधान होते हैं। छंदों मे बहर तवील, चौबोला, दो बोला, शेर, सवैया एवं लावनी की प्रचुरता होती है। प्रमुख वाद्य नक्कारा एंव सांरगी है।

स्वांग–

बुन्देलखण्ड में प्रचलित स्वांग यहां का प्राचीनतम लोक नाट्य है। स्वांग का अर्थ है नकल या अनुकृति। इसमें लोक रूचि के विभिन्न प्रसंगो पर किसी की नकल का अभिनय गीत तथा नृत्य के साथ किया जाता है। वीररस और श्रृंगार प्रधान कथानकों से लेकर सामाजिक रूढ़ियों, अंधविश्वासों तथा असामाजिक प्रवृत्तियों पर केन्द्रित इसके छोटे छोटे कथानक हास परिहास तथा व्यंग विनोद से भरपूर लोकानुरंजन करते हैं। अकुत्रिइनकी विशिष्टता यहां की लोक शैली है। पथ–नाट्यों की भांति खुले मैदान, गलियों और चबूतरों पर प्रायः इसका मंचन होता है। विभिन्न जातियों के स्वांग अलग अलग शैली में मिलते है। भाटो के मड़ियाव भी स्वांग में ही आते है।

जुगिया या बाबा (स्वांग) –

यह स्वांग का ही एक रूप है किन्तु इसके मंचन तथा दर्शन पर महिलाओं का एकाधिकार है। यदि भूल से सामने कोई पुरूष देखने भी आ जाये तो उसे बेलन या डण्डों के प्रहार का सामना करना पड़ता है। लड़के के विवाह के समय बारात जाने के बाद, महिलायें इसकी प्रस्तुति घर के आंगन में या बाहर चबूतरे पर करतीं है। इसमे विवाह की रस्मों की नकल के साथ ही राधाकृष्ण रासलीला, गायन, नृत्य तथा अन्य मनोंरजक कथाओं को प्रस्तुत किया जाता है।

अन्य लोक नाट्य के विपरीत इसमें पुरूषों की भूमिका भी महिलायें ही करतीं हैं। वादक भी महिलायें ही होती है। किसी भी नाट्य अथवा संगीत विद्यालय से अप्रशिक्षित ग्राम्य महिलाओं में इस लोक कला का विकास परम्परा से हुआ हैं। अकुत्रिवाद्यों में ढोलक, मजीरां, कांसा तथा झींका का प्रयोग होता है।